ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 38 कुल पृष्ठ-8 17 से 23 मई, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 आ.शु.-05

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) का महासमिति अधिवेशन अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ मुख्य उद्बोधन

प्रदेश के कोने-कोने से हजारों शिक्षकों ने अधिवेशन में लिया भाग

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) का दिनांक 15 व 16 मई, 2018 को दो दिवसीय प्रदेश महासमिति अधिवेशन ज्योति बा फूले उच्च माध्यमिक विद्यालय में स्थानीय सांसद देवजी एम पटेल के मुख्य आतिथ्य में प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने प्रदेशभर से आये प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भविष्य के निमार्ण का दायित्व शिक्षक का है। माँ पहला, पिता दूसरा व सही मायने में सच्चा गुरु शिक्षक है। हमारा देश विश्व गुरु रहा है। इसी देश में गुरुकुल पद्धति से राम व कृष्ण जैसे शिष्य तैयार हुए जो वेद, मर्यादा, शस्त्र, व धर्मशास्त्र का ज्ञान रखते थे। लार्ड मैकाले के भारत में आने के बाद गुरूकुल को स्कूल कहा जाने लगा। यहाँ दुनिया के लोग चरित्र निर्माण तथा उच्च शिक्षा के लिए भारत में आते थे। यहाँ प्राचीन समय में वेदो से ज्ञान-विज्ञान प्राप्त कर जैसे पारस पत्थर को छूने से लोहा भी सोना बन जाता है, उसी तरह से विद्यार्थी तैयार किये जाते थे और आज पुनः उसी व्यवस्था की आवश्यकता है। उन्होने जनवरी में नववर्ष को मनाने का विरोध जताते हुए कहा कि हमारी संस्कृति इसकी इजाजत नहीं देती। ये विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। चैत्र मास एकम ही सही नववर्ष है। यह पृथ्वी का श्रृंगार दिवस है। इसे मनाने के लिए लोगों को प्रेरित करने की आवश्यकता है। उन्होने कहा कि देश में शिक्षा जगत के क्षेत्र में नये क्रांतिकारी परिवर्तन करने की आवश्यकता है। देश की 68 प्रतिशत जनसंख्या नौजवान है। यम व नियम की शिक्षा ही विश्व का सत्य दर्शन है। उन्होंने कहा कि मातृभक्ति, पितृभक्ति, देशभक्ति व ईश्वरभक्ति के बारें में हमको बालकों को बताना होगा तब ही श्रेष्ठ बालक का निर्माण कर सकेंगें। उन्होने बालिका शिक्षा को बढावा देने का आह्वान किया। साथ ही माताओं पर समाज के निर्माण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी लक्षित की।

इस अवसर पर सांसद देवजी एम पटेल ने कहा कि गुरु का दर्जा भगवान से ज्यादा है। शिक्षा ही जीवन है और जीवन देने वाला शिक्षक है। जालोर जिले में शिक्षा केन्द्रो का विकास हुआ है। यहाँ से ही निकलकर प्रतिभा आगे देश का नाम रोशन करेगी। उन्होनें पर्यावरण सरंक्षण को महती आवश्यकता बताते हुए सभी को सरंक्षण में आगे आने का आहवान किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्या की देवी सरस्वती व भारत माता की तस्वीर पर माल्यार्पण कर तथा सामूहिक राष्ट्रगीत का गान हुआ। महामंत्री देवलाल गोचर ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंनें संगठन के विभिन्न् कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा भावी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। स्वागताध्यक्ष भभूतराम सोलंकी ने स्वागत भाषण देते हुए जालोर की वीरता की गाथा को बताया। उन्होनें संगठन के कार्यों की प्रशंसा करते हुए शिक्षकों को ध्वजवाहक का संगठन बताया। सभी अतिथियों ने 'संगठन सारथी' स्मारिका का विमोचन किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिक्षक संघ प्रदेशाध्यक्ष प्रहलाद शर्मा ने कहा कि यह संगठन शिक्षक हित में संघर्षरत है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संरक्षक नानक कुंदनानी ने जालोर के आयोजन की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और शिक्षकों को अपने अधिकारो को लेकर जागरुक रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष शिवदत आर्य ने प्रभावशाली रुप से किया। इससे पूर्व आज प्रातः 11.00 बजे शैक्षिक सत्र में हिंदू जागरण मंच जोधपुर व जयपुर प्रान्त के संगठन मंत्री मुरलीधर ने बोलते हुए कहा कि शिक्षक पर समाज को बेहतर करने के लिए कि बड़ी जिम्मेदारी है। शिक्षक एकजुट होकर समाज पर विभिन्न प्रकार से होने वाले हमलों से बचने के उपाय आने वाली पीढ़ी को बताए। भारतीय संस्कृति जिंदा है तो विश्व में शांति का माहौल रहेगा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष श्री रविन्द्र सिंह बालावत ने कहा कि शिक्षक संघ राष्ट्रीय शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक के हित में काम करने वाला संगठन है। यह संगठन सामाजिक सरोकार से जुडा हुआ है और समाज के नवनिर्माण के लिए भारत के भविष्य को तैयार कर रहा है।

इससे पूर्व प्रो. रामनारायण शास्त्री के सान्निध्य में राष्ट्रीय रक्षा यज्ञ किया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि देवता वो होते हैं जो हमेशा मनुष्य को देते ही रहते हैं इसलिए हमें उनके प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए। विधान संशोधन सत्र उमरावमल की अध्यक्षता में आयोजित हुआ जिसमें कई संविधान संशोधन पारित किए गए। सत्र में प्रदेश उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद सिंह जयमाला पानेरी, डॉ अरुणा शर्मा, देवकीनन्दन सुमन, अरविंद व्यास, नवीन शर्मा, दिनेश कुमार शर्मा उपस्थित थे। इस अवसर पर महिला प्रदेश मंत्री डॉ अरुणा शर्मा, एबीआरएसएम के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष बजरंग प्रसाद मजेजी व मोहन पुरोहित, संरक्षक नानक कुन्दनानी, प्रदेश मंत्री रवि आचार्य, प्रदेश संगठन मंत्री महावीर प्रसाद सिंघल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंद व्यास, उपाध्यक्ष नवीन शर्मा, हरियाणा आर्य युवक परिषद के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री रामसिंह आर्य, प्रधान संचालक भंवरलाल आर्य, प्रदेश उपाध्यक्ष शिवदत आर्य, दलपतसिंह आर्य, नारायणसिंह राठौड, प्रशांत सिंह, गोपाल सिंह मण्डलावत, मदन सिंह राठौर, अम्बिका प्रसाद तिवारी, ओम प्रकाश खण्डेलवाल, देवराज चौधरी, श्रीराम शर्मा, कृष्ण कुमार, नूर मोहम्मद सहित बडी संख्या में शिक्षक मौजूद रहे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शिक्षा का वर्तमान सन्दर्भ और स्वामी दयानन्द सरस्वती

– एच. के. शर्मा, प्राचार्य

महर्षि दयानन्द का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब विदेशी हुकूमत भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पद–दलित कर भारतीयों के मन में हीन–भावना के तन्तु पनपा रही थी। काले और गोरे का जाति विभाजन कुचक्र चलाकर वे ऐसे भारतीय पैदा करने के प्रयत्न कर रहे थे जो शिक्षित होकर क्लर्की का काम कर सकें और रंग से भारतीय और मन से अंग्रेजियत के हामी हों। ऐसे समय में जब भारतीय शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर काले बादल मंडरा रहे थे, तो भारतीय क्षितिज पर प्राची के अंक से ऐसा देदीप्यमान सूर्य स्वामी जी के रूप में उदित हुआ जिसने शैक्षिक, सामाजिक धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में फैले प्रदूषण कलांश को धोकर अपने उस प्रकाश से निर्मल बना दिया जो शाश्वत सत्य है। शैक्षिक एवं सामाजिक धरातल पर उन्होंने जो शंखनाद किया वह आर्यावर्त का श्रेष्ठ पुनर्जागरण कहा जा सकता है।

एक प्रकृतिवादी पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री जिसका नाम 'रुसो' था उसने शिक्षा जगत को नारा दिया था ''बालक स्वतन्त्र उत्पन्न होता है किन्तु धीरे–धीरे उसे बन्धन में बांध दिया जाता है अतः मैं कहता हूँ 'प्रकृति की ओर लौट चलो'।'' स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र की आत्मा को पहचाना, आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया, और छद्म वेशी पाखण्डों के खण्ड–खण्ड कर इस देश के आर्यजनों को नव चेतना से अनुप्राणित कर दिया। उन्होंने कहा जो सत्य है, जो तर्क पर खरा उतरता है वह सदैव स्वीकार्य होना चाहिए और जो इससे भिन्न है वह त्याज्य होना चाहिए। उन्होंने देश को बहरुपियों से बचाकर शिक्षा और समाज का भारतीयकरण सही अर्थ में कर डाला। 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद' की पुनीत भूमि पर रचे बसे गुरुकुल पद्धति के शिक्षा आश्रमों को चिन्हित कर उन्होंने नारा दिया वेदों की ओर लौट चलो।

वर्तमान समय की आवश्यकता और दृष्टिकोण के विस्तार से स्वामी दयानन्द अपरिचित नहीं थे। वे जानते थे–वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में संकुचित दृष्टिकोण, रुढ़िवादित और अन्धविश्वासों के मायाजालों में फंसा रहना अनर्थकारी है। इसलिए उन्होंने लोगों को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि दी। भूत प्रेत गण्डे ताबीज, ओझाओं के झाड़–फूंक आदि के कुचक्रों में न जाने कितने स्त्री पुरुष दिगभ्रमित हो रहे थे। कर्मकाण्डी और पाखण्डी पोपों के चंगुल में बहुत लोग फंसे थे यहां तक कि नर बलि तक को मान्य मान लिया गया था। अभी कुछ दिन पूर्व गणेश जी की मूर्ति को दूध पिलाने की घटना ज्यादा पुरानी नहीं जब न केवल अशिक्षित नर–नारियों ने अपितु अनेक शिक्षितजनों ने भी इसे सत्य मानकर दिन छिपते छिपते मूर्ति को दूध पिलाया था। पितृ श्राद्धों और नमः तुम्बाय के खोखलेपन आज भी जन–मन को बहका रहे हैं। महर्षि ने इन सामाजिक विसंगतियों को दूर कर तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि देकर लोगों को ठग और स्वार्थी लोगों से बचाने का कवच देकर सामाजिक शिक्षा में एक अध्याय जोड़ा। पाखण्ड खण्डिनी ध्वज फहराकर लोगों को गुमराह न होने की शिक्षा दी। समाज को सुशिक्षित और सुसंस्कारित करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। सामाजिक परिवर्तन की 'शिक्षा' संवाहिका कही जाती है। और तर्क के डण्डे से विष कुंभों को महर्षि दयानन्द ने चूर–चूर कर समाजोनति का शैक्षिक मार्ग प्रशस्त किया।

किं बहुना, महर्षि जानते थे कि उपदेशों का प्रभाव स्थायी चिकित्सा नहीं है। पाश्चात्य विद्वान और शिक्षाविद सुकरात की यह विशेषता थी कि वह लोगों को प्रश्नोत्तर शैली से अपनी बात समझता था। आजकल बी. एड. आदि में विद्यार्थियों को भाषण पद्धति के स्थान पर प्रभावी प्रश्नोत्तर शैली में पढ़ाने का आग्रह है। एक चैतन्य शिक्षक के नाते स्वामी जी ने जो कुछ जन–जागरण की शिक्षा दी वह प्रश्नोत्तर शैली में ही है। उनके शिक्षकीय आदान प्रदान की यह शैली प्रमाण सहित होने के कारण बड़ी प्रभावी थी।

आजकल साक्षरता पर बड़ा जोर दिया जा रहा है, सभी को शिक्षित करने का लक्ष्य है। इस दिशा में लोक जुम्बिश, शिक्षाकर्मी योजना, सरस्वती योजना और शिक्षा के सार्वजनीकरण की योजना इस हेतु चलाई जा रही है। इस पर करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं। एक सौ तिरसठ वर्ष पहिले इसका एक व्यावहारिक हल बताया जो सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास से अविकल उद्धृत है –

''संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।'' उन्होंने आगे लिखा।

''राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि, पांचवें–आठवें वर्ष के आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो।''

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

आजकल महिला शिक्षा की बात बहुत उभर कर आ रही है। बहुत से क्षेत्र आज भी महिला–शिक्षा में काफी पिछड़े हुए हैं। लड़कियों को 'चूल्हा–चक्की कर्म' का एक अंग अभी भी माना जाता है कम आयु में बालिकाओं का विवाह या लड़कियों का विद्यालय में नामांकन अभाव आज की ज्वलन्त समस्याएँ हैं। देश में नारी शिक्षा की दशा शोचनीय है। स्त्रियाँ लक्ष्मी से दासी की परिधि में सिमट रही हैं। बलात्कार, हिंसा, आत्महत्या जैसे विभत्स दृश्य नारी–अशिक्षा के मुखर पृष्ठ हैं, इन सबसे निजात पाने के लिए स्वामी जी ने नारी को सम्मानीय पद पर लाकर प्रतिष्ठित कर दिया। लिंग भेद से अन्तर न करना, वेदाध्ययन की अधिकारिणी होना, आदि धरातलों पर उन्होंने नारियों को उनका अधिकार दिलाने में कोई कोर कसर नहीं रखी। 'रूपकंवर' जैसे सती प्रथा के दुराचरण को समाप्त करके उन्होंने नारियों की प्राण रक्षा का पुनीत कार्य किया। वे मासूम बच्चियाँ। वे निरी विधवाएँ।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों की शिक्षा की बात कह कर शैक्षिक समाज में एक क्रान्ति ला दी। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा –

- लड़कियों को भी लड़कों के समान पढ़ाना चाहिए।

- प्रत्येक कन्या का अपने भाई के समान उपनयन संस्कार होना चाहिए।

- लड़कियों का विवाह न तो बाल्यावस्था में हो, न उनकी इच्छा के विरुद्ध।

- पुत्री को पुत्र के समान और विधवा को विधुर के समान अधिकार है।

आज के सन्दर्भ में जो आर्य कन्या विद्यालय/महाविद्यालय इस दिशा में शिक्षा का प्रसार करने में जुटे हैं, सचमुच वे शिक्षा जगत की महत्त्वपूर्ण और सामाजिक सेवा कर रहे हैं।

आजकल विद्यालयों/महाविद्यालयों में सह शिक्षा एक प्रचलित शिक्षा है सरकारी शिक्षालयों में संसाधनों के अभाव में कदाचित् इसे स्वीकारा गया है। किन्तु आये दिन प्रधानाध्यापकों/आचार्यों के सम्मुख (सह शिक्षागत दोषों के परिणाम स्वरूप) छात्राओं की प्रायः शिकवा शिकायतें, अशोभनीय व्यवहारगत हरकतों की दास्तानें सुनने देखने में आती हैं। वयस्क किशोर–किशोरियों के मध्य विषम लिंगियों के प्रति आकर्षण के यह दृश्य मनोवैज्ञानिक सत्य हैं। इसे ध्यान में रखकर स्वामी जी ने कहा था – लड़के और लड़कियों के अलग–अलग विद्यालय हों और इनमें एक दूसरे का आवागमन वर्जित हो। वर्तमान समय में समानता का मौलिक अधिकार दिया गया है। शिक्षा जगत में शैक्षिक अवसरों की समानता 'Equal opportunites of Education' बहुचर्चित पाठ्य प्रकरण है और इसके विभिन्न अर्थ दिये जा रहे हैं। स्वामी जी की पारखी दृष्टि से यह ओझल नहीं हो सका और उन्होंने 'समान शैक्षिक अवसर' प्रकरण पर अपना मन्तव्य इस प्रकार व्यक्त किया है –

यदि वेदों का आश्रय लिया जाये और तर्क के आधार पर सोचा जाये तो मानव मानव में कोई भेद मालूम नहीं होता। वेदों में कहा गया है कि ''एकैव मानुष जाति।'' स्वामी जी ने समस्त मानव जाति को एक मानते हुए उसके आचरण को प्रधानता दी है। उन्होंने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप सभी को शिक्षा प्रदान करने की बात कही। अवर्ण और सवर्ण के जन्मगत भेद गर्तों को जातिगत, धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने की दृष्टिमति देते हुए कहा –

''जो दुष्ट कर्मकारी द्विज को श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्मकारी शूद्र को नीचा माने तो इससे परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।''

इस उद्धरण से शिक्षा के प्रति उनकी सोच और आचरण आधारित शिक्षा के लिए सभी को द्वार उन्मुक्ति का सामयिक परिचय मिलता है।

शिक्षा, यद्यपि एक सतत प्रवाहिता निर्झरणी है तथापि आज के संदर्भ में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को कभी नहीं भुला सकते। गंगा तो बहेगी, किन्तु महर्षि के हिमालयी उद्गम स्थलों की अनदेखी करना हमारी भूल होगी। महर्षि दयानन्द जी उदात्त भावनाओं और नैसर्गिक बोध के तत्त्वेत्ता थे। देश के अग्रणी चिन्तक, समाज सुधारक, क्रान्ति के अग्रदूत, शैक्षिक दृष्टिदाता, संस्कृति के शाश्वत कोष मातृभाषा, मातृ संस्कृति, मातृभूमि और मातृशक्ति के प्रति उनके मन में अगाध लगाव था। उनका शैक्षिक चिन्तन इसी लगाव से प्रभावित था। 'भारत भारतीयों के लिए है' और इसकी शिक्षा नीति रीति भी भारतीयता से परे नहीं हो सकती। बापू ने 'हरिजन' के एक अंक में सन् १९२२ में लिखा था दयानन्द जी की आत्मा आज भी हमारे बीच काम कर रही है। वे आज उस समय से भी अधिक प्रभावशाली हैं जबकि वे हमारे बीच सदेह थे।'' जिस देव दिव्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने शिक्षा के माध्यम से जाति संप्रदाय विहीन समाज की संरचना का, नारी के सम्मान का, निरक्षरता निवारण का और सुसंस्कारिता की शिक्षा का जो आलोक भारतीय खितिज से हमें परोसा है उस देदीप्यमान सूर्य को शत–शत नमन।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

हरिद्वार चलो! चलो हरिद्वार!! हरिद्वार चलो!!!

आर्ष शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित करने के लिए

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के परिसर में आयोजित होने वाले

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में हजारों की संख्या में पहुँचे

शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार 6, 7, 8 जुलाई, 2018

देश–विदेश के समस्त आर्यजनों से अपील

आर्य बन्धुओं! आपको विदित है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन 6 से 8 जुलाई, 2018 की तिथियों में विशाल स्तर पर हरिद्वार के गुरुकुल कांगड़ी परिसर में आयोजित किया जा रहा है। यह सम्मेलन लगभग एक दर्जन गुरुकुलों के संचालक एवं आर्ष शिक्षा पद्धति को समर्पित श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में आयोजित होगा। इस सम्मेलन में देश–विदेश से हजारों की संख्या में आर्यजन एवं गुरुकुलों के छात्र–छात्राएँ भाग लेने के लिए पहुँच रहे हैं। यह महासम्मेलन आर्य समाज एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के इतिहास में पहला सम्मेलन होगा जिसके माध्यम से आर्ष शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित करने और इस प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने तथा सरकार से विशेष सहयोग प्राप्त करने के लक्ष्य को निर्धारित कर इस महासम्मेलन का आयोजन किया गया है।

1. गुरुकुल महासम्मेलन में अपनी व अपने आस–पास की आर्य समाजों को तथा आर्य बन्धुओं को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सम्पर्क कर प्रेरित करें जिससे अधिक से अधिक आर्यजन इस ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन में भाग लें।
2. अपने प्रान्त के समस्त गुरुकुलों के प्रबन्धकों एवं आचार्यों से भी सम्पर्क कर इस ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन में अधिक से अधिक छात्र–छात्राओं के साथ भाग लेने की तैयारी करवायें। ।
3. अपनी सभा से सम्बन्धित पत्र/पत्रिका में आगामी दो मास तक निरन्तर इस गुरुकुल महासम्मेलन से सम्बन्धित समाचार प्रकाशित करवाने का कष्ट करें जिससे अधिकाधिक लोग सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रेरित हो सकें।

आशा है सम्मेलन को सफल बनाने के लिए उपरोक्त बिन्दुओं से सम्बन्धित त्वरित कार्यवाही करते हुए आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। ऐतिहासिक गुरुकुल महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए आर्य बन्धुओं, दानदाताओं, आर्य समाजों व प्रान्तीय सभाओं से विशेष निवेदन है कि तन–मन–धन से सहयोग करें। कृपया दूरभाष द्वारा समय–समय पर सम्पर्क करके अपने कार्यों की प्रगति की सूचना देते रहें। सम्मेलन परिसर में सभी आगन्तुक महानुभावों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था निःशुल्क रहेगी।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
सभा प्रधान

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा मंत्री/संयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

'महर्षि दयानन्द भवन' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष : 011–23274771, 23260985, 9013783101, 9849560691, 9354840454, 8218863689

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सूर्यनगरी जोधपुर में किया गया भव्य स्वागत

कार्यकर्ता बैठक के बाद प्रेस कांफ्रेंन्स का आयोजन किया

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान श्री रामसिंह आर्य ने किया संयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल के पोस्टर का जोधपुर में विमोचन करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य, आर्य वीरदल के प्रधान संचालक श्री भंवर लाल आर्य, श्री चांदमल आर्य, मा. नारायण सिंह आर्य व श्री हरि सिंह आर्य

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय जोधपुर के वाइस चांसलर प्रो. वासन एवं अन्य अधिकारीगण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सभा के मीडिया प्रभारी मिशन आर्यावर्त के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र जी 15 मई, 2018 को वायुयान द्वारा दिल्ली से जोधपुर पहुँचे। जोधपुर हवाई हड्डे पर सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य के नेतृत्व एवं आर्य वीरदल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवर लाल आर्य के संयोजन में आर्य वीरों ने स्वामी आर्यवेश जी एवं ब्र. दीक्षेन्द्र जी का माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर न्यूज चैनलों के पत्रकारों ने हवाई अड्डे पर स्वामी आर्यवेश जी का विस्तार से इंटरब्यू लिया। स्वामी आर्यवेश जी तत्पश्चात् जालोर में आयोजित राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के महासमिति अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए कारों से रवाना हो गये। जालोर में आर्य वीरदल जालोर के आर्य वीरों ने ढोल नगाड़ों के साथ स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया और उन्हें गाड़ियों तथा मोटरसाइकिलों के लम्बे काफिले के साथ शिक्षक सम्मेलन में ले जाया गया। उनके साथ श्री रामसिंह आर्य, श्री शिव प्रसाद सोनी, श्री भंवर लाल आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री चांदमल आर्य, श्री हरि सिंह आर्य, श्री उमेद सिंह आर्य आदि के अतिरिक्त अन्य आर्यवीर भी उनके काफिले में शामिल रहे। स्वामी जी के स्वागत में आर्य वीरदल जालोर के संरक्षक श्री दलपत सिंह आर्य, श्री किशन कुमार आर्य, श्री विनोद कुमार आर्य, श्री प्रशान्त सिंह आर्य, श्री शिवदत्त आर्य, शिवगंज से पधारे श्री हरदेव सिंह आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय है। शिक्षक संघ के अधिवेशन में सम्मिलित होने के उपरान्त स्वामी जी तथा अन्य सभी साथी जोधपुर लौट आये तथा रात्रि प्रवास जोधपुर में हुआ।

16 मई, 2018 को प्रातः 9 बजे जोधपुर के प्रमुख कार्यकर्ताओं तथा आर्य वीरों के साथ स्वामी जी ने बैठक की और 6, 7, 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के लिए जिम्मेदारियाँ लगाई। अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार में श्री रामसिंह आर्य के नेतृत्व में जोधपुर, जालोर, बाड़मेर, बालोत्रा, शिवगंज, पाली, मेड़ता सिटी आदि स्थानों से आर्य वीरों की टोलियाँ भारी संख्या में सम्मिलित होंगी तथा इन सभी स्थानों से कम से कम 51 हजार रुपये की राशि सम्मेलन हेतु प्रदान की जायेगी। बैठक के बाद स्वामी आर्यवेश जी और सभी पदाधिकारी श्री शिवप्रसाद सोनी जी के निवास पर भोजन के लिए पधारे, जहाँ श्री शिव प्रसाद सोनी जी ने स्वामी जी का परम्परागत तरीके से स्वागत किया तथा मंगलाचरण के साथ उन्हें उचित आसन पर बैठाया गया। इस अवसर पर उपस्थित परिजनों एवं मित्रगणों से स्वामी जी का परिचय कराया गया। इसके बाद यह काफिला श्री नारायण सिंह आर्य के निवास पर पहुँचा, जहाँ श्री नारायण सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी ने स्वामी जी का तिलक लगाकर माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। जलपान के पश्चात् काफिला आगे बढ़ गया। यहाँ से अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय जोधपुर के वाइस चांसलर प्रो. वासन तथा प्रसिद्ध समाजसेवी श्री अतीक मोहम्मद के आग्रह पर स्वामी जी तथा अन्य सभी साथी विश्वविद्यालय के मुख्यालय में गये। जहाँ उपस्थित प्रबुद्ध महानुभावों ने तथा प्रो. वासन व अतीक मोहम्मद साहब ने सभी का शॉल एवं बुकें देकर स्वागत किया। अपने स्वागत में आयोजित इन सभी कार्यक्रमों में स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के सप्तक्रांति अभियान एवं अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार में सहयोग करने तथा सम्मिलित होने की अपील की। सभी ने अत्यन्त उत्साह के साथ सहयोग का आश्वासन दिया।

12 बजे शांति लॉज के मालिक श्री पवन मेहता की व्यवस्था एवं श्री रामसिंह आर्य के संयोजन में स्वामी जी की एक प्रेस कांफ्रेन्स आयोजित की गई।

विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि धर्म के नाम पर बढ़ता

हुआ पाखंड एवं अंधविश्वास तमाम धार्मिक जगत के लिए एक चुनौती है। उन्होंने कहा कुछ कथित धर्मगुरु धर्म परायण जनता की धार्मिक भावना का दोहन करके अकूत धन दौलत इकट्ठी कर लेते हैं, तथा ऐसे ही ढोंगी पाखंडी स्त्रियों के साथ बलात्कार करते हुए पकड़े जाते हैं। धार्मिक जगत को शर्मसार होना पड़ता है। आर्य समाज ने अपने प्रारंभिक काल से ही धार्मिक पाखंड अंधविश्वास, जादू–टोना, तंत्र–मंत्र ज्योतिष, गंडा ताबीज तथा विभिन्न वेद विरुद्ध परम्पराओं तथा रूढ़ियों का जमकर विरोध किया है तथा जनता को जागृत किया है। वर्तमान समय में देश की विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध भी आर्य समाज जन जागृति का अभियान चला रहा है। समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचार के अनुसार सैकड़ों ढोंगी बाबा पाखंडी, दुराचारी कथित संत धर्मगुरु या तो जेलों में पड़े हैं या फिर संगीन मुकदमों में अदालतों के चक्कर काट रहे हैं। आसाराम एवं राम रहीम रामपाल दास तथा वीरेंद्र दीक्षित आदि ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने दुराचरण से धर्म को कलंकित किया है। आर्य समाज इन जैसे समस्त तथाकथित धर्म गुरुओं की भर्त्सना करता है।

आर्य समाज, धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाएगा। शास्त्र संवाद एवं जन जागृति के द्वारा धर्म के सच्चे स्वरूप को जनता के समक्ष प्रस्तुत करेगा।

आर्य समाज वर्तमान में और अधिक प्रासंगिक हो गया है, जिस तरह आजादी के आंदोलन में आर्य समाज ने अहम भूमिका निभाई थी, वैसे ही आज भी उसकी उतनी ही जरूरत है।

स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि धार्मिक अंधविश्वास पाखण्ड तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सशक्त विकल्प तैयार करने के लिए आगामी 6, 7, 8 जुलाई 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में देश के प्रतिष्ठित संन्यासी, वैदिक विद्वान, गुरुकुलों के आचार्य, आचार्या, केंद्र सरकार के मंत्री, राज्य के मुख्यमंत्री, आईपीएस अधिकारी, गुरुकुलों के छात्र–छात्राएँ तथा हजारों की संख्या में आर्यजन एकत्रित होंगे। महासम्मेलन में लार्ड मैकाले द्वारा लागू की गई वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में मूल्य आधारित एवं नैतिकता युक्त शिक्षा प्रणाली का प्रारूप तैयार किया जाएगा। प्राचीन काल से ही भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित रही है। जिसमें छात्र–छात्राओं का चहुँमुखी विकास एवं निर्माण किया जाता था। आवासीय शिक्षा व्यवस्था होने के कारण गुरु के कुल में छात्रों को न केवल शिक्षित किया जाता था बल्कि संस्कारित भी किया जाता था। वर्तमान समय में देश को एक ऐसी ही शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो बच्चे को सच्चा इंसान एवं सभ्य नागरिक बना सके। हरिद्वार में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन इस दिशा में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा। महासम्मेलन में योग गुरु स्वामी रामदेव, स्वामी विवेकानंद, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी धर्मानंद, स्वामी अग्निवेश, स्वामी चिदानंद, स्वामी सत्यमित्रानन्द आदि विद्वान् संन्यासी विशेष रूप से आमंत्रित किए गए हैं।

आज प्रेस वार्ता में जोधपुर महिला कांग्रेस की अध्यक्षा मनीषा पवार, श्री मनोहर लाल आर्य, श्री दीपक आर्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री रामसिंह आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य, श्री चांदमल आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री हरिसिंह आर्य, श्री भंवरलाल आर्य, श्री उमेद सिंह आर्य, श्री शिव सोनी आदि उपस्थित रहे। उत्साही आर्य वीर एवं पत्रकार श्री विकास जी ने प्रेस कांफ्रेन्स के आयोजन में विशेष भूमिका निभाई।

शाम 3 बजे एयर इंडिया के हवाई जहाज से स्वामी आर्यवेश जी एवं ब्र. दीक्षेन्द्र जी दिल्ली लौट गये।

कर्मठ, उत्साही, प्रसिद्ध समाजसेवी प्रो. श्योताज सिंह की स्मृति में सार्वदेशिक सभा के मुख्यालय में किया गया प्रेरणा सभा का आयोजन

सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों, संस्थाओं के अधिकारियों तथा पारिवारिक जनों ने अर्पित किये श्रद्धा-सुमन

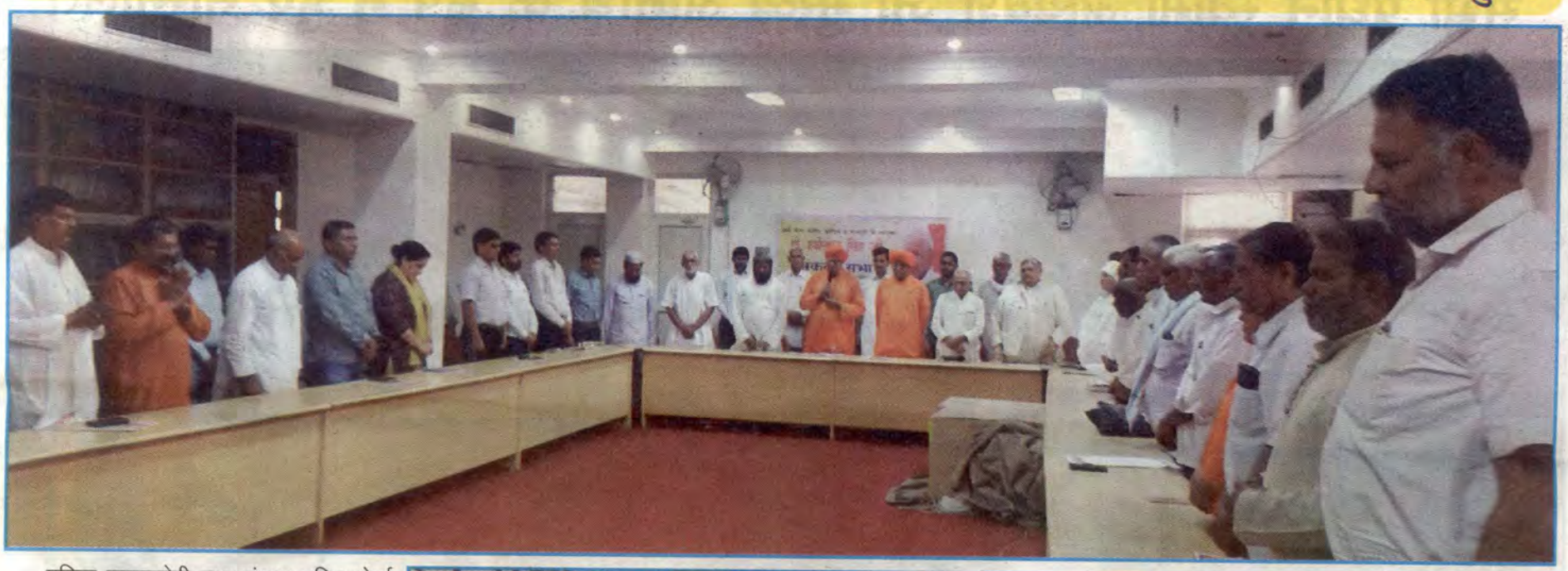

प्रसिद्ध समाजसेवी तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के यशस्वी मंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी की स्मृति में प्रेरणा सभा का आयोजन दिनांक 12 मई, 2018 को अपरान्ह 3 बजे सार्वदेशिक सभा के विशाल हॉल में किया गया। इस प्रेरणा सभा की अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाजसेवी स्वामी अग्निवेश जी ने की। सभा का संचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। इस अवसर पर प्रो. श्योताज सिंह जी के प्रशंसकों, मित्रों, गणमान्य व्यक्तियों तथा पारिवारिकजनों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने प्रो. श्योताज सिंह जी को एक संकल्पवान व्यक्ति बताते हुए अपने संस्मरण सुनाये। उन्होंने कहा कि प्रो. श्योताज सिंह जी ने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था कि समाज के अन्तिम व्यक्ति को सुखी बनाना। वे समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के अधिकारों के लिए निःस्वार्थ भाव से सारा जीवन संघर्ष करते रहे। वे अत्यन्त सरल व्यक्ति थे लेकिन कमजोर व्यक्ति के अधिकारों के हनन पर वे लौह पुरुष हो जाते थे। गरीब, दलित, शोषित व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, मजहब का हो इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसका सहयोग करना, उसके लिए लड़ाई लड़ना उनके जीवन का मिशन था। प्रो. श्योताज सिंह जी एक योगी थे। उनका जीवन हर प्रकार की एषणाओं से मुक्त था। स्वामी जी ने कहा कि प्रोफेसर साहब को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब उनके छोड़े हुए कार्य को पूर्ण करें और उनके मिशन को आगे बढ़ायें।

इस अवसर पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने प्रो. श्योताज सिंह जी को अत्यन्त निष्ठावान, ईमानदार, साहसी तथा कर्मठता का धनी बताया। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर साहब से हमारा परिचय लगभग 40 वर्ष से था। वे जैसे अन्दर थे वैसे ही बाहर थे। स्पष्टवादिता उनका विशेष गुण था। उन्होंने कहा कि देश तथा समाज के लिए उनकी भावना बहुत उच्च थी। वे बहुत बड़े सपने को लेकर चले थे। बंधुआ मजदूरों को छुड़ाने के लिए वे कई बार अकेले ही चल पड़ते थे। उनके ऊपर कई बार कातिलाना हमले भी हुए थे, लेकिन वे अपने लक्ष्य से कभी भी अलग नहीं हुए।

प्रो. श्योताज सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने कहा कि श्रद्धा का फूल मन की वाटिका में खिलता है। शब्दों में ताकत नहीं है कि भावों को व्यक्त कर सके। प्रो. श्योताज सिंह जी का चरित्र अत्यन्त उच्च था। उनकी विचारधारा क्रांतिकारी थी। उन्होंने कहा कि संस्कृति का उद्भव जंगलों में ही हुआ है। प्रो. श्योताज सिंह भी शहर से दूर जंगल में ही निवास करते थे और समाज तथा देश की उन्नति के लिए गहन चिन्तन किया करते थे। दबे-कुचले लोगों तथा समाज में व्याप्त धार्मिक पाखण्ड, भ्रष्टाचार तथा शोषण जैसी बुराईयों को दूर करने के लिए उन्होंने कठिन परिश्रम किया था। उनके हृदय में समाज का जो रूप विद्यमान था उसको पूर्ण करने के लिए हम सभी को कटिबद्ध होना चाहिए।

सभा के उपमंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यकारी प्रधान जोधपुर से पधारे श्री रामसिंह आर्य ने कहा कि प्रो. श्योताज सिंह कठोर बचनों के साथ अत्यन्त सहृदय व्यक्ति थे। उन्होंने कहा कि सत्य बोलने के लिए बहुत ताकत चाहिए और प्रो. श्योताज सिंह जी सत्य बोलने से कभी परहेज नहीं करते थे। उनके हृदय में बसा प्रेम ही उनका व्यक्तित्व था। उन्होंने आर्य राष्ट्र बनाने का स्वप्न देखा था और हम सब को उस स्वप्न को पूर्ण करने के लिए प्रयास करना होगा।

दिल्ली पुरोहित सभा के अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने बताया कि प्रो. श्योताज सिंह जी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा तथा वे बड़े खुद्दार नेता थे। बात करने का उनका अलग अंदाज था। गरीबों, मजदूरों, किसानों के लिए उन्होंने बहुत कार्य किया। उनका सारा जीवन अत्यन्त प्रेरणादाई है। गरीबों के साथ होने वाले अन्याय के विरुद्ध कार्य करने वाले बहुत कम लोग होते हैं। प्रो. श्योताज सिंह जी ने आजीवन गरीबों के लिए संघर्ष किया।

मौलाना शाहीन कासमी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जो महान व्यक्तित्व हमारे बीच नहीं रहे हैं, उनकी अच्छाईयों को ग्रहण करते हुए उनके द्वारा छोड़े गये कार्यों को पूर्ण करना ही आर्यों का कार्य है।

सिख धर्म की अनुयायी सर्वेन्द्र कौर खालसा ने कहा कि जो इस संसार से विदा हो जाते हैं और उनके लिए लोग दुःखी होते हैं, उनका जीवन सफल होता है। उन्होंने कहा कि श्योताज सिंह जैसे व्यक्तियों का जीवन लोगों को अच्छे कार्य को करने के लिए प्रेरित करता है। उनको असली श्रद्धांजलि यही होगी कि हम समाज में व्याप्त बुराईयों के लिए संघर्ष करें और समाज को सुन्दर बनायें।

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री ओम सपरा ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि प्रो. श्योताज सिंह अत्यन्त निर्मल हृदय के व्यक्ति थे। वे समय के बड़े पाबन्द थे और जब उन्हें पता लगता था कि कहीं किसी पर अत्याचार हो रहा है तो अपने को रोक नहीं पाते थे। ऐसे संघर्षशील व्यक्ति को हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

झुंझुनू से पधारे श्री धर्मपाल सिंह एडवोकेट ने कहा कि हमारी प्रो. श्योताज सिंह के साथ बहुत पुरानी मित्रता थी, वे संकल्प के धनी व्यक्ति थे। समाज की सेवा करने के लिए निर्बलों, असहायों, शोषितों की सहायता तथा सेवा करने के लिए उन्होंने प्रोफेसर पद से इस्तीफा दे दिया था। यह कोई मामूली बात नहीं है। वे आजीवन बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने के लिए कटिबद्ध रहे।

इस अवसर पर सभा का संचालन कर रहे स्वामी आर्यवेश जी ने प्रो. श्योताज सिंह जी को अत्यन्त निर्भय, उत्साह से भरपूर, शोषितों के दुःख-दर्द को दूर करने के लिए अपने जान की भी परवाह न करने वाला अत्यन्त निष्ठावान आर्य बताया। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि उन्होंने जहाँ शोषितों, निर्बलों के उद्धार का ऐतिहासिक कार्य किया वहीं आर्य समाज के विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेकर अपने आर्यत्व का परिचय दिया। तप, त्याग, तपस्या का सामाजिक जीवन जीते हुए 40 वर्ष तक कार्य करने के उपरान्त उनका जीवन पाक साफ तथा पवित्र रहा। यह कोई छोटी बात नहीं। वे निराश्रितों की आवाज थे। उनका जीवन संन्यासियों जैसा जीवन था। समाज के आकर्षण और विकर्षण से वे बहुत दूर थे। उनका संकल्प था कि वे आर्य राष्ट्र बनाने के लिए हमेशा कटिबद्ध रहेंगे और उन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

इस अवसर पर मानव सेवा संस्थान के रामपाल शास्त्री, साध्वी अग्नयानन्दी, गुरुकुल कांगड़ी के सिनेट के सदस्य हृदयेश जी, श्री गिरिराज सिंह, श्री खूबीराम जी, श्री रामकुमार आर्य, श्री राजीव भारद्वाज, श्री थम्पी जी, श्री जियाउद्दीन जावेद, श्री अशोक वशिष्ठ, श्री हरपाल सिंह, श्री लीला राम, श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट, श्री देवेश कुमार, श्री हरि कुमार, श्री नरेन्द्र सोलंकी, श्री ऋषिपाल, श्री मायाराम, श्री राममोहन राय एडवोकेट पानीपत सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने प्रो. श्योताज सिंह जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

इस अवसर पर बचपन बचाओ के अध्यक्ष श्री कैलाश सत्यार्थी सहित विदेशों में बसे हुए उनके मित्रों, विभिन्न संस्थाओं तथा गणमान्य व्यक्तियों ने शोक संदेश भेजकर प्रो. श्योताज सिंह जी को श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

आर्य रत्न प्रो. बलजीत सिंह आर्य के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर 10 मई, 2018 को गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल जिवाना के प्रांगण में महत्त्वपूर्ण विचार गोष्ठी तथा आर्य कार्यकर्ताओं की बैठक का किया गया आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

महान समाजसेवी आर्यरत्न प्रो. बलजीत सिंह आर्य के 81वें जन्मदिवस के अवसर पर चौधरी चरण सिंह समाज सुधार मंच के तत्वावधान में 10 मई, 2018 को गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल जिवाना जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के प्रांगण में एक महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी तथा आर्य कार्यकर्ता बैठक का आयोजन किया गया। संगोष्ठी तथा बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त श्री सुखवीर सिंह गठीना, प्रो. भाग सिंह आर्य एवं डॉ. विजयपाल सिंह (हरियाणा), प्रिं. रूकम पाल सिंह आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने देश में बढ़ती हुई नशाखोरी, जातिवाद, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड, महिला उत्पीड़न, भ्रष्टाचार तथा साम्प्रदायिकता जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर अपनी प्रखर शैली में विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि समाज यदि आगे ले जाना है तो उपरोक्त बुराईयों के विरुद्ध संघर्ष करना होगा और देश को इन बुराईयों से मुक्त करके आदर्श समाज के निर्माण के लिए कार्य करना होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित कार्यकर्ताओं से अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में दल–बल सहित सम्मिलित होने तथा अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग जुटाकर प्रदान करने की अपील की। इस अवसर पर प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने 11 हजार रुपये की राशि देकर स्वामी जी का सम्मान किया।

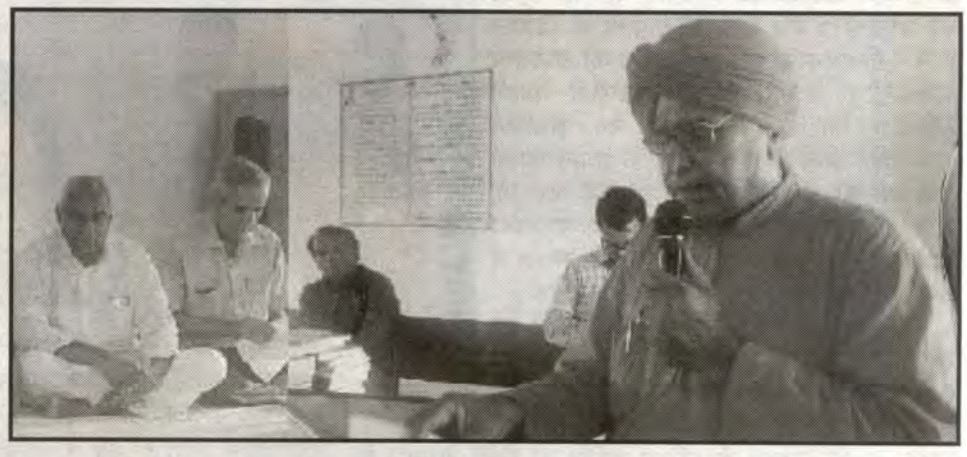

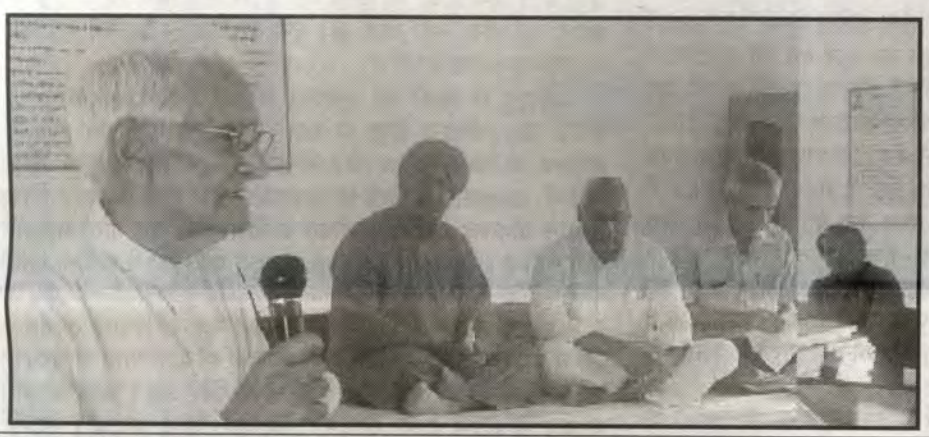

इस अवसर पर ग्राम सिसली के पूर्व प्रधान श्री सत्यवीर सिंह फौजी, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बागपत के महामंत्री श्री रिपुदमन सिंह, मंत्री श्री रवि आर्य, कर्मठ कार्यकर्ता श्री विनोद ढाका, श्री विजय सिंह राठी, श्री राजपाल सिंह, श्री हरपाल आर्य निरपुरा आदि ने भी सम्मेलन में सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया। बैठक एवं संगोष्ठी से पूर्व प्रो. बलजीत सिंह आर्य के 81वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रातः यज्ञ किया गया जो 5 मई से निरन्तर चल रहा था। आशीर्वाद के पश्चात् यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान आचार्य ओमपाल जी थे। इस अवसर पर प्रो. बलजीत सिंह आर्य को शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर विभिन्न गाँव से पधारे आर्य महानुभावों ने तथा विविध संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सम्मानित करके बधाई दी। सम्पूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था स्कूल के प्रधानाचार्य श्री राजीव खोखर एवं निदेशक डॉ. अनिल आर्य के संयोजन में सर्वश्री मित्रमुनि वानप्रस्थी, डॉ. सुनील आर्य व्यवस्थापक, डॉ. सुनील वत्स उपप्रधानाचार्य, श्री रविन्द्र कुमार सहव्यवस्थापक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री मनोज कलीना ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर

साहित्य तथा अन्य विक्रेताओं के लिए स्टालों का आरक्षण प्रारम्भ

पहले आओ – पहले पाओ

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित पुस्तक मेले के लिए स्टालों का आरक्षण प्रारम्भ हो गया है। इस अवसर पर देश–विदेश के हजारों आर्यजन तथा गणमान्य व्यक्ति पधारेंगे जिससे पुस्तक विक्रेता भाईयों को वैदिक साहित्य के प्रचार–प्रसार का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा। अन्य सामग्री विक्रेताओं के लिए भी स्टाल उपलब्ध है। 15X15 के स्टाल बनाये जायेंगे जिनका शुल्क मात्र 3 हजार रुपये रखा गया है। शुल्क राशि 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से चैक/ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक सभा कार्यालय में भेजें। असुविधा से बचने के लिए अग्रिम राशि भेजकर अपने स्टालों को अविलम्ब सुरक्षित करा लें। सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश जी से मो.:–9810431857 पर शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

श्री वेदमुनि संन्यास आश्रम में प्रवेश करने के उपरान्त

स्वामी वेदानन्द सरस्वती बने

दिनांक 28 से 30 अप्रैल, 2018 को आर्य समाज पिलखुआ का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर 28 अप्रैल, 2018 को श्री वेदमुनि जी ने संन्यास आश्रम की दीक्षा अनेकों गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में ग्रहण की। संन्यास की दीक्षा महर्षि दयानन्द बालिका इण्टर कालेज, सासनी, हाथरस, उत्तर प्रदेश के संस्थापक–अध्यक्ष, अधिष्ठता गुरुकुल गंगीरी, अलीगढ़, उ. प्र., स्वामी शांतानन्द सरस्वती जी ने विधि–विधान से प्रदान की। संन्यास की दीक्षा लेने के उपरान्त श्री वेदमुनि जी का नाम स्वामी वेदानन्द सरस्वती रखा गया। इस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारियों के अतिरिक्त स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी निर्भयानन्द, स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी सुकर्मानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द, सम्मानमुनि तथा सुममुनि सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

स्व. फेरू सिंह (मुंशी जी) की स्मृति में ग्राम–रठौड़ा, जिला–बागपत (उ. प्र.) में 21वाँ यज्ञ एवं कार्यकर्ता बैठक का किया गया शानदार आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपने प्रवचन से श्रोताओं को किया प्रेरित

आर्य समाज छपरौली के उपप्रधान एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री अवनीश कुमार के पूज्य दादा श्री चौ. फेरू सिंह (मुंशी जी) की स्मृति में ग्राम–रठौड़ा स्थित अपने निवास पर एक शानदार कार्यकर्ता बैठक एवं यज्ञ का आयोजन 11 मई, 2018 को किया। यज्ञ का संचालन एवं वेद पाठ श्री राजेन्द्र शास्त्री एवं राजेन्द्र जी ने किया। ब्रह्मा के पद पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी विराजमान हुए। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित प्रवचन श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना तथा अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में सक्रिय योगदान देने का आश्वासन दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. फेरू सिंह (मुंशी जी) को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि ऐसी महान आत्माएँ संसार में कभी–कभी आती हैं। जिनकी यश–कीर्ति सदियों तक समाज को प्रेरणा देती रहती है। स्व. फेरू सिंह (मुंशी जी) भी ऐसी ही दिव्य आत्मा थे। उन्होंने अपने ग्राम एवं क्षेत्र में लम्बे समय तक आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी जी ने कहा कि उनका जीवन यज्ञमय था और वे सदैव परोपकार के कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग लिया करते थे। स्वामी जी ने अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन की सूचना देते हुए सहयोग की अपील भी की। इसका उपस्थित श्रोताओं ने उत्साहजनक आश्वासन देकर स्वामी जी के प्रस्ताव का समर्थन किया। स्वामी आर्यवेश जी ने इस कार्यक्रम में आयोजक श्री अवनीश आर्य उपप्रधान आर्य समाज छपरौली को साधुवाद देकर उत्साहित किया। मुख्य यजमान मनोज खोखर रहे।

इस अवसर पर सर्वश्री मा. ओमपाल सिंह, मा. धर्मपाल सिंह, देवेन्द्र सिंह दरोगा, अन्तरपाल मुखिया, वीरेन्द्र सिंह, प्रिं. महक सिंह पूर्व प्रधान आर्य समाज छपरौली, धर्मवीर आर्य पूर्व प्रधान आर्य समाज छपरौली, ओमवीर सिंह दरोगा दिल्ली पुलिस, कंडेरा निवासी, प्रसिद्ध समाजसेवी चौ. विक्रम सिंह ठेकेदार, नरेन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज छपरौली, धर्मेन्द्र आर्य, उपप्रधान आर्य समाज छपरौली, कृष्णपाल खलीफा प्रधान आर्य समाज छपरौली, मा. इन्द्र सिंह, योगेन्द्र आर्य, सुधीर बदरका, सुधीर–हेवा, जयवीर पहलवान, सुन्दर, धर्मवीर–प्रधान मुकुन्दपुर, मा. पुष्पेन्द्र, सुशील रोहिल्ला, मनोज–छपरौली एवं सार्वदेशिक सभा के मंत्री मधुर प्रकाश व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य भी उपस्थित थे। शांति पाठ एवं जलपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज का 143 वाँ स्थापना दिवस समारोह

सनातन हिन्दू समाज ही राष्ट्र का आधार

काशी आर्य समाज, बुलानाला के तत्वावधान में आर्य समाज के 143वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर 10 अप्रैल, 2018 को आर्य समाज में आयोजित संगोष्ठी में सार्वदेशिक सभा के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने कहा कि छद्म धर्म निरपेक्षतावादी हिन्दू समाज को विघटित करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। आर्य समाज का दायित्व है कि वह हिन्दूओं को जाग्रत करने के ऐतिहासिक दायित्व का पुनः निर्वहन करें।

आर्य विद्वान् पं. ज्ञान प्रकाश आर्य अध्यक्ष काशी आर्य विद्वत् परिषद् ने बतलाया कि सनातन हिन्दू समाज ही राष्ट्र का आधार स्तम्भ है। राष्ट्र की अखण्डता, सम्प्रभुता और सर्वधर्म और सर्वधर्म समभाव हिन्दुओं की एकता तथा उनके अभेद्य संगठन पर ही निर्भर है।

अध्यक्षीय सम्बोधन में काशी आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने कहा कि आज की परिस्थिति में सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में आर्य समाज को सशक्त प्रहरी की भूमिका निभानी होगी।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से सर्वश्री डॉ. विशाल सिंह मोतीलाल आर्य, रमेश जी आर्य, प्रेमचन्द्र, विभा आर्या, हेमा आर्या, विवेक सिंह एडवोकेट, एस.एन. प्रसाद, डॉ. शिव कुमारी, बृजभूषण सिंह, रणजीत सिंह आदि उपस्थित रहे।

समारोह का आरम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, श्री रमेश जी आर्य, लल्लन जी आर्य, मोतीलाल आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री ने तथा धन्यवाद प्रकाश डॉ. विशाल सिंह ने किया। शान्ति पाठ श्री मोती लाल आर्य ने कराया। अन्त में जयघोष के उपरान्त समापन हुआ।

– प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री

हर घर में रखने योग्य श्रेष्ठ पुस्तक

'चिकित्सा भास्कर'

लेखक – मधुर शास्त्री

चरक संहिता के अनुसार रोग एवं उनकी चिकित्सा – रोगों का निदान, अनेक अनुभवी संन्यासी, महात्मा तथा जन साधारण के अनुभव के आधार पर गुप्त रोगों पर किए गए प्रयोग, निर्धन, धनी व्यक्तियों के लिए शास्त्र प्रमाण अनुभव द्वारा पुष्ट, आयुर्वेद चिकित्सा का प्रामाणिक एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। अतः सभी ग्राहकों के हित में निवेदन है कि वे उपरोक्त पुस्तक को खरीदने के लिए प्रकाशक से सीधा सम्पर्क करें।

मूल्य 200/– रुपये, डाक व्यय निःशुल्क।

प्राप्ति स्थान – मधुर प्रकाशन

2804, बाजार सीताराम, दिल्ली–110006

– मधुर शास्त्री, मो.:–9810431857

बेटी हूँ मैं

– लवली शर्मा

मौत आई है मुझे कई बार। एक बार नहीं सौ बार।
कभी मारा मुझे समाज ने। तो कभी उन्हीं के रिवाज ने।।
कभी मरी हूँ मैं दहेज के जहर से, तो जली कभी उसी के कहर से।
'बाप' ने कभी दुनिया दिखा के मारा।
तो कभी मारा माँ की कोख में।।
आड़ ली मौत ने कभी मर्दानगी की,
तो छुपी कभी एक तरफा चाहत की चादर में।
जिन्दा रहकर भी मरी हूँ यारों,
जब बनी थी शिकार किसी की हवस की।
जलाया गया कभी मुझे सती बनाकर,
तो मौत गई मुझे कभी निर्भया बनाकर।।
मरी उस पल भी थी जब हर लिया था चीर मेरा,
और मरी उस पल भी जब बिक गया शरीर मेरा।।
मौत आई मेरी पहचान को भी,
मौत आई मेरी मुस्कान को भी,
और मौत आई मेरी उड़ान को भी।
मौत आती रही मैं मरती रही।
वो मारती रही और मैं सहती रही।।
पूछ लिया एक बार मैंने मौत से की, हर बार मरती मैं ही क्यों हूँ?
वो भी कह गई मुस्करा के.....
बेटी है तू। बेटी है तू। बेटी है तू।

E-mail : sharmalovely1607@gmail.com

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ओ३म्

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

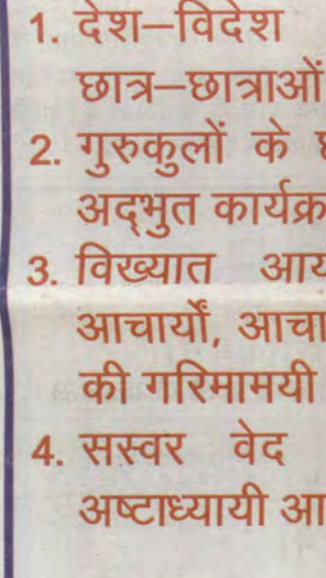

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
(विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

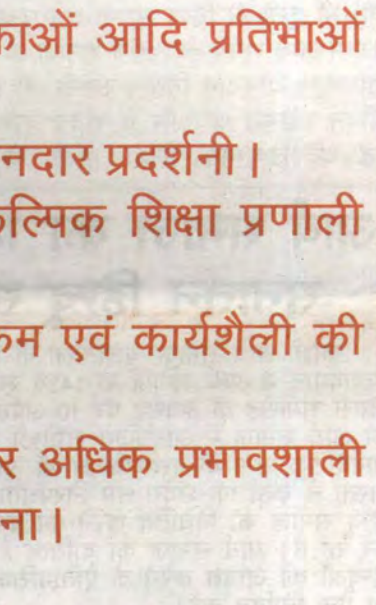

मान्यवर,

विश्व की समस्त आर्य समाजों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का आयोजन 6 से 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के प्रांगण में किया जा रहा है। आर्य समाज के इतिहास में यह पहला अवसर है जब समस्त गुरुकुलों का अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हो रहा है। आप सभी से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में हरिद्वार पहुँचकर महासम्मेलन में शामिल हों तथा इस ऐतिहासिक आयोजन के साक्षी बनें।

मुख्य आकर्षण

1. देश–विदेश के गुरुकुलों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं का अभूतपूर्व समागम
2. गुरुकुलों के छात्र–छात्राओं द्वारा आकर्षक एवं अद्भुत कार्यक्रमों की प्रस्तुति।
3. विख्यात आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, आर्यनेताओं एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति तथा भाषण।
4. सस्वर वेद पाठ, कंठस्थ वेद–वेदांग एवं अष्टाध्यायी आदि की प्रस्तुति।
5. संस्कृत संभाषण एवं नाटिकाओं आदि प्रतिभाओं का प्रदर्शन।
6. गुरुकुलों के इतिहास की शानदार प्रदर्शनी।
7. आर्ष शिक्षा प्रणाली को वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली घोषित करने का प्रस्ताव।
8. समस्त गुरुकुलों के पाठ्यक्रम एवं कार्यशैली की एकरूपता का प्रयास।
9. आर्ष शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाने की योजना तैयार करना।

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन–मन–धन से सहयोग करें।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :– 011–23274771, 23260985, ई–मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।